नीबूवर्गीय फलों के प्रमुख रोग एवं उनका नियंत्रण

srijan सृजन
Self-Reliant Initiatives through Joint Action

नींबूवर्गीय फलों का नासूर (Citrus Canker)

यह रोग नींबूवर्गीय फलों का प्रमुख रोग है जो खट्टे नींबू को अधिक प्रभावित करता है। प्रारम्भिक अवस्था में पत्तियों पर छोटे उभरे हुए पीले धब्बे निचली सतह पर दिखाई देते हैं। बाद में यह धब्बे बड़े होकर घाव जैसे उभरे हुए, भूरे और कॉर्कयुक्त हो जाते हैं तथा उनके किनारे उभरे हुए और बीच का भाग धँसा हुआ होता हैं। एक स्पष्ट पीला घेरा अक्सर नासूर धब्बों को घेरे रहता है, जिससे उन्हें आसानी से पहचाना जा सकता है। अंततः घाव पत्तियों की ऊपरी और निचली दोनों सतहों पर दिखाई देने लगते हैं। फलों पर पत्तियों के समान लक्षणों वाले नासूर धब्बे विकसित हो जाते हैं, जिससे उनकी क्वालिटी खराब होनें से अच्छा बाजार भाव नही मिलता है।

रोग का कारण एवं फैलनें का तरीका:

यह एक जीवाणु जनित रोग है जो बगीचे में अधिक छाया तथा उचित पोषकतत्व एवं सिंचाई प्रबंधन नही करनें के कारण होता है। यह रोग लीफमाइनर नामक रसचूसक कीटो के द्वारा एक पौधे से दूसरे पौधे पर फैलाया जाता है।

रोग प्रबंधन:

- पौधे खरीदते समय पत्तियों पर इस प्रकार के लक्षण दिखें तो उन पौधों को नही खरीदना चाहिए।
- बगीचों की नियमित छँटाई करना चाहिए जिससे पौधों को पर्याप्त सूर्यप्रकाश मिल सके।
- बगीचे में उचित एवं नियमित पोषकतत्व एवं सिंचाई प्रबंधन करना चाहिए।
- बगीचे में लीफमाइनर नामक रसचूसक कीटो का समय–समय पर उचित नियंत्रण करना चाहिए।
- बगीचें में रोग के लक्षण दिखनें पर प्रभावित पौधे के रोगग्रस्त भाग को तत्काल काट कर नष्ट कर देना चाहिए।
- इस रोग के प्रभावी नियंत्रण के लिए वर्ष में कम से कम दो बार बोर्डेक्स मिश्रण के 1% के घोल का छिड़काव अवश्य करना चाहिए।

नींबूवर्गीय फलों का गोंद रिसाव रोग (Citrus Gummosis)

रोग के लक्षण सर्वप्रथम मिट्टी की सतह के पास वाले तने के भाग पर दिखाई देते हैं जिसमें तनें की छाल गीलापन लिए हुए गहरी काली हो जाती है और सड़नें लगती है। इसके बाद जड़ें सडनें लगती हैं। तने एवं शाखाओं की छाल फटनें लगती है और दरारों से गोंद जैसा पदार्थ निकलनें लगता है। अधिक संक्रमण की स्थिति में पत्तियाँ पीली पड़ जाती हैं तथा नई पत्तियाँ आना बंद हो जाती है और अंत में पौधा सूख जाता है।

रोग का कारण एवं फैलनें का तरीका:

यह एक मृदा जनित कवक रोग है जो तनें के पास अधिक समय तक नमी रहनें पर पौधों को संकमित करता है और सिंचाई जल तथा कटाई–छँटाई के लिए उपयोग किए गये यंत्रों से फैलता है।

रोग प्रबंधन:

- अच्छे जल निकास वाली भूमि में ही नींबूवर्गीय फलों का बगीचा लगाना चाहिए।
- सिंचाई उचित विधि से उचित अंतराल पर करना चाहिए। तनें को सदैव पानी के सम्पर्क में आनें से बचाना चाहिए।
- पौधों की कटाई–छँटाई के बाद प्रति वर्ष मिट्टी की सतह से एक मीटर की ऊँचाई तक बोर्डो पेस्ट का लेप करना चाहिए।
- मिट्टी के पास के तनें तथा जड़ों को चोट लगने से बचाना चाहिए।
- प्रारम्भिक संक्रमण की स्थिति में रोगग्रस्त छाल को तेज धारदार औजार से काटकर तत्काल बोर्डो पेस्ट का लेप करना चाहिए।
- गंभीर रूप से संक्रमित पौधों को उखाड़ कर नष्ट कर देना चाहिए।
- जैव–नियंत्रण एजेंट के रूप में प्रति वर्ष ग्रीष्मकालीन पोषकतत्व प्रबंधन के समय मिट्टी में ट्राइकोडर्मा विरिडी (प्रति पौधा 50–100 ग्राम) का प्रयोग करना चाहिए।
- अधिक जलभराव की स्थिति में बोर्डेक्स मिश्रण (1%) का छिड़काव करना लाभप्रद रहता है।

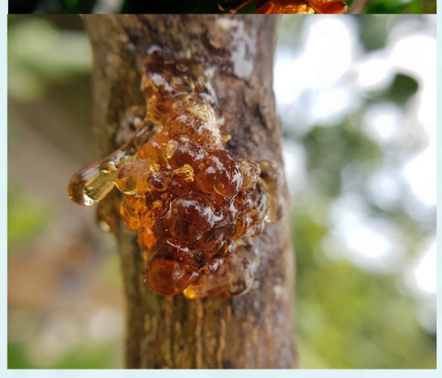

नींबूवर्गीय फलों का स्कैब (Citrus Scab)

यह रोग नींबूवर्गीय सभी फल वृक्षों को प्रभावित करता है। बरसात के मौसम में इस रोग का प्रकोप अधिक होता हे। सर्वप्रथम पत्तियों पर गुलाबी–भूरे रंग के उभरे हुए स्पंजी पपड़ीनुमा दाने दिखाई देते हैं जो बाद में गहरे भूरे रंग के हो जाते हैं। पत्तियाँ झुर्रीदार, विकृत और बौनी हो जाती हैं। दानें सबसे अधिक पत्ती की निचली सतह पर होते हैं और बाद में पत्तियों के साथ–साथ टहनियों और तनों पर भी दिखाई देते है। फलन प्रारम्भ होनें पर यह धब्बे/दानें फलों पर भी दिखाई देते है जिससे फलों का विकास रुक जाता है और उनकी गुणवत्ता खराब हो जाती है।

रोग का कारण एवं फैलनें का तरीका:

यह एक फफूँद जनित रोग है इसके बीजाणु बारिश के छीटों, सिंचाई जल और हवा से एक पौधे से दूसरे पौधे पर फैलते हैं।

रोग प्रबंधन:

- पौधे खरीदते समय पौधों पर इस प्रकार के लक्षण दिखें तो उन पौधों को नही खरीदना चाहिए।
- बगीचे में उचित एवं नियमित पोषकतत्व तथा सिंचाई प्रबंधन करना चाहिए।
- पौधों की कटाई–छँटाई करते समय प्रत्येक पौधे की छँटाई करनें के बाद औजारों को रोगनाशी के घोल से निजर्मीकृत करके ही दूसरे पौधे की कटाई–छँटाई करनी चाहिए।
- इस रोग के प्रभावी नियंत्रण के लिए वर्ष में दो बार (मध्य जून एवं मध्य अक्टूबर) ट्रायकोडर्मा विरिडी दवा का 5 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव अवश्य करना चाहिए।

नींबूवर्गीय फलों का हरापन (Citrus Greening)

यह रोग नींबूवर्गीय फलों की लगभग सभी किस्मों को प्रभावित करता है। पौधें पर पत्तियाँ कम संख्या में और आकार में छोटी तथा चमड़े जैसी हो जाती हैं। पत्तियों का रंग जिंक की कमी से मिलता–जुलता पीले धब्बोंयुक्त हरा हो जाता है। टहनियाँ मरनें लगती है। फल आधे हरे और पीले रंग के होकर बदरंग हो जाते हैं। कभी–कभी आकार छोटा रह जाता है। फलों में रस और घुलनशील ठोस कम तथा अम्लता अधिक हो जाती है।

रोग का कारण एवं फैलनें का तरीका:

यह एक जीवाणु जनित रोग है जो बगीचे में उचित पोषकतत्व एवं सिंचाई प्रबंधन नही करनें के कारण होता है तथा साइला (साइलिड्स) नामक रसचूसक कीटो के द्वारा एक पौधे से दूसरे पौधे पर फैलाया जाता है।

रोग प्रबंधन:

- पौधे खरीदते समय पौधों पर इस प्रकार के लक्षण दिखें तो उन पौधों को नही खरीदना चाहिए।
- बगीचे में उचित एवं नियमित पोषकतत्व तथा सिंचाई प्रबंधन करना चाहिए।
- बगीचे में साइलिड्स नामक रसचूसक कीटो का समय–समय पर उचित नियंत्रण करना चाहिए।
- बगीचें में रोग के लक्षण दिखनें पर प्रभावित पौधे के रोगग्रस्त भाग को तत्काल काट कर नष्ट कर देना चाहिए और नीबू के सभी पौधों पर टेट्रासाइक्लिन नामक दवा के 500 पीपीएम के घोल का छिड़काव 15 दिन के अंतर से दो बार करना चाहिए।

नींबूवर्गीय फलों का ट्रिस्टेज़ा विषाणु (Citrus Tristeza Virus)

इस रोग से प्रभावित पेड़ की पत्तियाँ आरंभिक अवस्था में हल्की हरी होकर धीरे–धीरे छड़नें लगती हैं और पत्ते रहित टहनियाँ मरने लगती हैं। पेड़ की छाल के नीचे तने पर गड्ढे देखे जा सकते हैं। तने पर गड्ढे होने से पेड़ बौने हो जाते हैं तथा उनमें फल भी कम लगते हैं। रोगग्रस्त पेड़ों पर आमतौर पर भारी मात्रा में फूल आते हैं। फल छोटे आकार के और खराब गुणवत्ता वाले (बेस्वाद फल) होते हैं।

रोग का कारण एवं फैलनें का तरीका:

यह एक विषाणुजनित रोग है जो माहूँ नामक कीट के द्वारा फैलाया जाता है। माहूँ गर्मियों में अधिक सक्रिय होते हैं और अपनी जनसंख्या के साथ–साथ रोग के प्रसार को भी बढ़ाते हैं।

रोग प्रबंधन:

- पौधे खरीदते समय पौधों पर इस प्रकार के लक्षण दिखें तो उन पौधों को नही खरीदना चाहिए।
- बगीचे में उचित एवं नियमित पोषकतत्व तथा सिंचाई प्रबंधन करना चाहिए।
- बगीचे में रोगग्रस्त पौधा दिखनें पर उसके रोगग्रस्त भागों अथवा सम्पूर्ण पौधे को काटकर नष्ट कर देना चाहिए।
- बगीचे में माहूँ नामक रसचूसक कीट के प्रभावी नियंत्रण के लिए पीले चिपचिपे प्रपंच का उपयोग करना चाहिए। अधिक प्रकोप की स्थिति में जैविक कीटनाशी का उपयोग कर उचित नियंत्रण करना चाहिए।

नींबूवर्गीय फलों का काली फफूँदी रोग (Sooty Mould)

पत्तियों पर कालिखयुक्त फफूँद बहुतायत में फैलती है जोकि काले भूरे मखमली पतले झिल्लीदार आवरण के रूप में पत्तियों की ऊपरी सतह पर चिपकी रहती हैं। गंभीर मामलों में, भारी संक्रमण के कारण पत्तियाँ पूरी तरह काली दिखाई देती हैं। शुष्क परिस्थितियों में प्रभावित पत्तियाँ मुड़ जाती हैं और सिकुड़ जाती हैं। यह कालिख फल एवं शाखाओं पर भी आसानी से देखी जा सकती है।

रोग का कारण एवं फैलनें का तरीका:

यह एक फफूँद जनित रोग है जो स्केल कीटों, एफिड्स, सफेद मक्खियों और मीली बग्स द्वारा उनके शरीर से निकाले गये रस पर निर्भर रहती है। साथ ही इन्ही कीटों द्वारा इस रोग को एक पौधे से दूसरे पौधे पर फैलाया जाता है। बगीचें में अधिक वृक्ष सघनता, मिट्टी में नमी की अधिकता, अधिक तापमान एवं आद्रता रोग के अधिक विकास में सहायक होती हैं।

रोग प्रबंधन:

- बगीचों की नियमित छटाई करना चाहिए जिससे पौधों को पर्याप्त सूर्यप्रकाश मिल सके।
- बारिश के मौसम में बगीचे में उचित जल निकास तथा गर्म मौसम में उचित सिंचाई प्रबंधन करना चाहिए।
- रोगवाहक कीटों के नियंत्रण के लिए पीले चिपचिपे प्रपंच का उपयोग करना चाहिए।
- कीटों के अधिक प्रकोप की स्थिति में उपयुक्त जैविक कीटनाशकों जैसे नीमास्त्र/ब्रम्हास्त्र के छिड़काव द्वारा शहद स्रावित करने वाले कीटों को मार दिया जाए तो उपयुक्त विकास माध्यम के अभाव में फफूँद नष्ट हो जाएगी।
- फफूँद/कवक के जल्दी नियंत्रण के लिए पौधों पर बोर्डेक्स मिश्रण (1%) का 15 दिन के अंतर से 2 बार छिड़काव प्रभावी पाया गया हैं।

Designed by: Suryanshi Arts, Jhansi (U.P.)